कहानी 4

बनवारी लाल के पिता एक गरीब किसान थे। कुछ गरीबी की वजह से और कुछ शिक्षा का महत्व न समझ पाने की वजह से, वे बच्चों को पढ़ा–लिखा नहीं पाये। इसलिये बनवारी लाल को मात्र 12 साल की उम्र में ही एक ईंट के भट्टे में काम करना पड़ा। कुछ बड़ा हुआ तो एक रिश्तेदार ने पास के शहर में एक रासायनिक खाद के कारखाने में उसे हेल्पर लगा दिया। आज वह 40 साल का हो चुका है और उसी फैक्ट्री में काम करता है। उसके दो बच्चे हैं, एक लड़का और एक लड़की। बेटा सोनू 15 साल का है और बेटी प्रभा 12 साल की, दोनों पास के नगर निगम स्कूल में पढ़ते हैं।

छोटी उम्र से ही कठोर मेहनत के कारण अब बनवारी लाल का स्वास्थ्य जवाब देने लगा है। वह अक्सर सोचता है काश मेरे बेटे को भी कोई छोटी–मोटी नौकरी मिल जाती तो, मेरा बोझ कुछ हल्का तो हो जाता।

बनवारी लाल की पत्नी, सांवली देवी बड़ी सुशील और बुद्धिमान स्त्री थी। वह यह नहीं चाहती थी कि उसके बच्चे भी अपने पिता की तरह बाल श्रमिक बनें। वह फौरन अपने पति के मन की बात भांप गई और एक दिन अकेले में उससे बोली – क्या तुम चाहते हो कि हमारा सोनू बाल श्रमिक बने? बनवारी लाल ने कहा – क्या करूं, घर का खर्च

चलाना मुश्किल हो रहा है और इधर मेरा स्वास्थ्य भी कुछ ठीक नहीं रहता। सोनू को कुछ छोटे–मोटे काम में लगाने की सोच रहा था। सांवली देवी बोली, कल मैं अपनी सहेली के साथ जो आस–पास के घरों में रोटी बनाने और साफ–सफाई का काम करती है, काम की तलाश में गयी थी। दो घरों में काम मिल भी चुका है। सिलाई–कढ़ाई का काम तो मैं करती ही हूं। इससे घर का खर्च चलाने में तुम्हारी मदद भी हो जायेगी और सोनू की पढ़ाई भी नहीं छूटेगी। अब तुम कुछ दिन की छुट्टी ले लो और स्वास्थ्य केन्द्र में जाकर अपना इलाज कराओ।

इस तरह सांवली देवी घरों में रोटी बनाने और साफ–सफाई का काम करने लगी। दोपहर के बाद वह घर पर ही सिलाई का काम भी करती रही। इस तरह उनकी गृहस्थी को एक नया जीवन मिल गया। सोनू ने बारहवीं पास कर ली और शिक्षक–प्रशिक्षण केन्द्र में उसे दाखिला मिल गया। कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना की मदद से प्रभा अपनी स्कूल की पढ़ाई पूरी कर सकती है।

आज सांवली देवी गर्व से सर उठा कर कह सकती है कि पढ़ी–लिखी न होते हुए भी उसने अपने बच्चों को ना केवल बाल श्रमिक बनने से रोका बल्कि शिक्षा दिला कर आत्मनिर्भर बनाने में उनकी मदद भी की। आस–पड़ोस के परिवार के लिये बनवारी का परिवार एक मिसाल बन चुका है। इसका श्रेय सांवली को जाता है। सांवली सबको यही सलाह देती है – शिक्षा के महत्व को जानो, इसी में छिपी है भविष्य की कुंजी।

1

2

3

4

5

6

चर्चा के बिन्दुः

- शिक्षा का हमारे जीवन में क्या महत्व है?
- बाल श्रम के क्या कुप्रभाव होते हैं?
- अशिक्षा और बाल मजदूरी का दुष्चक्र पीढ़ी–दर–पीढ़ी कैसे चलता है?
- इस दुष्चक्र को कैसे तोड़ा जा सकता है?
- शिक्षा का अच्छा प्रभाव।

Concept and Design: New Concept Information Systems Pvt. Ltd., New Delhi

Supported by

unicef

unite for children